

नुकसानदायक केमिकल

तंबाकू में चार हजार से ज्यादा नुकसानदायक केमिकल पाए जाते हैं। सिगरेट में 40 ऐसे रसायन हैं, जो कैंसर की वजह बनते हैं।

निकोटिन: यह लत लगाने वाला केमिकल है। काफी शक्तिशाली है और तेजी से रिपेक्शन करता है। सिगरेट की लत इसी की वजह से लगती है।

बेंजीन: इसमें कोयला और पेट्रोलियम जैसे ज्वलनशील पदार्थों का गुण होता है। यह सिगरेट के जले रहने में मदद करता है। इसकी वजह से ल्यूकेमिया हो सकता है।

फॉर्मलिन्हाइड: काफी जहरीला होता है। इसका इस्तेमाल शवों को सुरक्षित रखने में किया जाता है। इसकी वजह से कैंसर होने का खतरा रहता है।

अमोनिया: टॉयलेट क्लीनर और ड्रायक्लिंग लिक्विड में इस्तेमाल किया जाता है। यह तंबाकू से निकोटिन को अलग कर गैस में बदल देता है।

एसिटोन: इसका इस्तेमाल नेल पॉलिश हटाने में होता है। इसमें ज्वलनशील गुण होता है जो फेफड़ों को काफी नुकसान पहुंचाता है।

टार: स्मोकिंग के समय धुएं के रूप में यह फेफड़े में जमा होता है। स्मोकिंग के दौरान जितनी टार बनती है, उसका 70 फीसदी फेफड़ों में जमा होता है। आर्सेनिक (चूहे मारने का जहर), हाइड्रोजन साइनाइड जैसे काफी जहरीले रसायन भी होते हैं।

पनपता खतरा



एक सिगरेट में 9 मिग्रा निकोटीन होता है, जो जलकर 1 ग्राम रह जाता है। निकोटीन सीधा शरीर को नुकसान नहीं पहुंचाता लेकिन यह सैकड़ों केमिकल के साथ रिपेक्शन कर टार बनाता है। यह टार फेफड़ों के ऊपर परत के रूप में चढ़ जाता है और बाद में उन्हें खत्म करने लगता है। अलग-अलग सिगरेट में निकोटीन का स्तर अलग-अलग होता है। सूखे हुए एक ग्राम तंबाकू में निकोटीन का स्तर 13.7 से 23.2 मिलीग्राम तक होता है। तंबाकू में कई तरह के कार्सिनोजन तत्व पाए जाते हैं जो कैंसर के कारण बनते हैं। धूम्रपान से लंग, मुंह, गला, कंठ, श्वासनली का कैंसर होने के चांस बढ़ जाते हैं। तंबाकू, खेनी, पान मसाला, गुटखा आदि के सेवन से भी इन अंगों के कैंसर होने की आशंका बढ़ जाती है। हालांकि कितने दिनों तक इसके इस्तेमाल से कैंसर हो सकता है, इस बारे में साफतौर पर नहीं कहा जा सकता। जब कोई स्मोकिंग करता है तो गाल की अंदरूनी परत पर और फेफड़े में निकोटीन अवशोषित हो जाता है। इसकी लत कोकेन या हेरोइन की लत से कम नहीं होती। नैशनल इंस्टिट्यूट ऑफ ड्रग एब्ज्यूज के अनुसार कैंसर के जितने मामले होते हैं, उसके एक तिहाई स्मोकिंग करने वालों से जुड़े होते हैं स्मोकिंग करने से फेफड़े की बीमारियां होती हैं और दिल की बीमारियां होने की आशंका बढ़ जाती है धूम्रपान न करने वालों के मुकाबले इसे करने वालों की उम्र सामान्य से 14 साल कम हो जाती है।

धुंए-धुंए में जिंदगी



हेल्थ संवाददाता

तंबाकू और धूम्रपान की लत ने कब हमारे जीवन में जगह बना ली, पता तक नहीं चल पाता। कभी दूसरे को देखकर, तो कभी बुरी संगत में आकर लोग सिगरेट, गुटखा, तंबाकू व दूसरी नशीली चीजों को साथी बना लेते हैं। इन्हें लेने वालों को लगता है कि इन चीजों ने उनकी जिंदगी आसान बना दी है। कई बार कम उम्र में ही खुद को बड़ों जैसा महसूस करने की ख्वाहिश में धुएं के छल्ले उड़ाने की ललक भी इस दलदल में धकेल देती है। जब इससे परेशानी होने लगती है, तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। हर कश स्वस्थ जीवन पर जुलम ढाता है। हर पुड़िया में जिंदगी घुल रही है। तंबाकू की हर चुटकी जिंदगी को चाट रही है। इस मौके पर क्यों न ठान लें कि तंबाकू और धूम्रपान की इस लत से छुटकारा पाना ही है।

निकोटिन की लत के लक्षण

अगर नीचे दिए गए लक्षण नजर आने लगे तो समझ लेना चाहिए कि इसान को निकोटिन की लत लग चुकी है। भूख कम महसूस होना। अधिक लार और कफ बनना। प्रति मिनट दिल को धड़कन 10 से 20 बार बढ़ जाती है तो यह लत का लक्षण है। छोटी बात पर भी बेचैनी महसूस होना। ज्यादा पसीना आना और उल्टी-दस्त होना। हर काम करने के लिए तंबाकू की जरूरत महसूस होना। निकोटीन लेने की इच्छा बढ़ जाना। चिंता बढ़ना, अवसाद, निराशा आदि महसूस होना। सिर दर्द होना और ध्यान केंद्रित करने में दिक्कत होने लगे तो भी इसे निकोटिन की लत का लक्षण माना जाता है।

सिगरेट छोड़ने के वैकल्पिक तरीके

ई-सिगरेट के मामलों से जुड़े विशेषज्ञ अंकित गौड़ का कहना है कि इससे शत-प्रतिशत निकोटिन के जीरो लेवल तक पहुंच जाने का दावा तो नहीं किया जा सकता, लेकिन सिगरेट छोड़ने में इससे मदद जरूर मिलती है। इसमें कार्टेज में अलग-अलग स्तर में निकोटिन डाला जाता है। एक अध्ययन से पता चलता है कि जब कोई सिगरेट की 15 कश लेता है तो उसके अंदर 1 से 2 मिलीग्राम निकोटिन जमा होता है, जबकि ई-सिगरेट में 16 मिलीग्राम निकोटिन वाले कार्टेज का इस्तेमाल करने से इतनी ही कश लेने पर 0.15 मिलीग्राम निकोटिन जमा होता है। स्वास्थ्य के लिहाज से यह तरीका भी सही नहीं है क्योंकि इसके जरिए भी निकोटिन तो शरीर में जाता ही है। इसकी मदद से निकोटिन के स्तर को कम किया जा सकता है और धीरे-धीरे कोई स्मोकर निकोटिन के जीरो लेवल तक पहुंच सकता है। पान की दुकानों पर, दवा की दुकानों पर और इंटरनेट के जरिए इसे खरीदा जा सकता है। पूरी किट 1 से 2 हजार तक मिल जाती है। इससे इतनी कीमत में लगभग 500 सिगरेट पी जा सकती हैं।

मुद्रा, ध्यान और योगाभ्यास: किसी प्रकार की लत होने से व्यक्ति का आत्मविश्वास कमजोर होने लगता है। सिगरेट, तंबाकू, गुटखा, पान मसाला जैसे नशीले पदार्थों का सेवन करने वाले भी अगर मुद्रा, ध्यान और योगाभ्यास करते हैं तो उनका आत्मबल बढ़ता है। ऐसे में इन लतों को त्याग पाने की इच्छा शक्ति उनके अंदर पैदा होती है।

सेहत को धुएं में उड़ाती ई-सिगरेट

यू तो ई-सिगरेट का इस्तेमाल सिगरेट छोड़ने वाले लोग एक माध्यम के तौर पर करते हैं, लेकिन भारत में बिना किसी नियम-कानून के चलते, दिन दोगुनी और रात चौगुनी गति से बढ़ रहा यह बाजार अब पूरी तरह से बेलगाम हो गया है। आलम यह है कि अभी तक सिगरेट छोड़ने के लिए इलाज के एक माध्यम के रूप में बाजार में मिलने वाली यह ई-सिगरेट, नए तरह का नशा बनकर उभर रही है। डॉक्टरों के अनुसार बाजार में मिलने वाली ई-सिगरेट्स में कई ब्रैंड ऐसे हैं, जिनमें सामान्य सिगरेट से भी कहीं ज्यादा मात्रा में निकोटीन है।

सिगरेट की तरह ही खतरनाक है ई-सिगरेट



इस साल अक्टूबर में मास्को में हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के तंबाकू नियंत्रण सेमिनार में ई-सिगरेट को सामान्य सिगरेट के जैसे ही खतरनाक और नुकसानदायक माना। वहीं सितंबर में दिल्ली में दक्षिण-एशियाई देशों की बैठक में भी इसे नुकसानदायक करार दिया गया है। यही कारण है कि भारत में ई-सिगरेट पर कड़े नियम बनाने की मांग बढ़ गई है।

नियम ही नहीं हैं, तो क्या करें

भारत में सार्वजनिक स्थान पर सिगरेट पीने पर प्रतिबंध है, लेकिन ई-सिगरेट पीने पर कोई नियम-कानून नहीं है। यही कारण है कि पिछले कुछ सालों में ऑनलाइन ई-सिगरेट मंगाने का ट्रेंड बहुत ज्यादा बढ़ा है। मुंबई की हील्थ फाउंडेशन के डॉ. प्रकाश गुप्ता का कहना है कि ई-सिगरेट में निकोटीन के ऐसे उत्पाद हैं, जिन्हें बिना किसी रोक-टोक के आसानी से इंटरनेट से मंगाया जा रहा है। भारत में तंबाकू पर बने कानून के तहत 18 साल से कम उम्र के बच्चों को तंबाकू प्रॉडक्ट नहीं दिए जाते, जबकि इंटरनेट के माध्यम से ई-सिगरेट किसी भी उम्र के लोग मंगा रहे हैं। गौरतलब है कि ई-सिगरेट बनाने वाली कंपनियां इसे सामान्य सिगरेट से कम हानिकारक के तौर पर प्रचारित कर रही हैं, लेकिन डॉक्टरों की राय इससे जुदा है। टाटा अस्पताल के हेड एंड नेक सर्जन, डॉ. पंकज चतुर्वेदी का कहना है कि किसी भी रिस्च के माध्यम से यह साबित नहीं हुआ है कि ई-सिगरेट, सिगरेट के डी-अडिक्शन के लिए किसी भी तरह से कारगर साबित हुई है बल्कि, यह उतनी ही नुकसानदायक है जितनी सामान्य सिगरेट। कई ब्रैंड के ई-सिगरेट में 36 मिलीग्राम तक निकोटीन की मात्रा होती है, जो उसे सामान्य सिगरेट से भी ज्यादा खतरनाक बनाती है।

वया है ई-सिगरेट

ई-सिगरेट बैटरी से चलने वाले ऐसा उपकरण है, जो निकोटीन को सीधे फेफड़ों तक पहुंचाता है। ई-सिगरेट, देखने में बिलकुल सामान्य सिगरेट या सिगार जैसी प्लास्टिक या मेटल से बनी होती है। बाजार में ई-सिगरेट के 7764 से भी ज्यादा फ्लेवर उपलब्ध हैं। यह सही है कि भारत में अभी तक ई-सिगरेट को लेकर कोई नियम नहीं है, लेकिन सरकार जल्द ही इस पर नियम लाने की तैयारी में है।



वया है स्वाइन फ्लू

स्वाइन फ्लू क्षुसन तंत्र से जुड़ी बीमारी है, जो ए टाइप के इनफ्लुएंजा वायरस से होती है। यह वायरस एच1 एन1 के नाम से जाना जाता है और मौसमी फ्लू में भी यह वायरस सक्रिय होता है। 2009 में जो स्वाइन फ्लू हुआ था, उसके मुकाबले इस बार का स्वाइन फ्लू कम पावरफुल है, हालांकि उसके वायरस ने इस बार स्ट्रेन बदल लिया है यानी पिछली बार के वायरस से इस बार का वायरस अलग है।

कैसे फैलता है

जब आप खांसते या छींकते हैं तो हवा में या जमीन पर या जिस भी सतह पर थूक या मुंह और नाक से निकले द्रव कण गिरते हैं, वह वायरस की चपेट में आ जाता है। यह कण हवा के द्वारा या किसी के छूने से दूसरे व्यक्ति के शरीर में मुंह या नाक के जरिए प्रवेश कर जाते हैं। मसलन, दरवाजे, फोन, कीबोर्ड या रिमोट कंट्रोल के जरिए भी यह वायरस फैल सकते हैं, अगर इन चीजों का इस्तेमाल किसी संक्रमित व्यक्ति ने किया हो।

शुरुआती लक्षण

- नाक का लगातार बहना, छींक आना, नाक जाम होना।
- मांसपेशियां में दर्द या अकड़न महसूस करना।
- सिर में भयानक दर्द।
- कफ और कोल्ड, लगातार खांसी आना।
- उनींद रहना, बहुत ज्यादा थकान महसूस होना।
- बुखार होना, दवा खाने के बाद भी बुखार का लगातार बढ़ना।
- गले में खराश होना और इसका लगातार बढ़ते जाना।

नॉर्मल फ्लू से कैसे अलग

सामान्य फ्लू और स्वाइन फ्लू के वायरस में एक फर्क होता है। स्वाइन फ्लू के वायरस में चिड़ियों, सूअरों और इंसानों में पाया जाने वाला जेनेटिक मटीरियल भी होता है। सामान्य फ्लू और स्वाइन फ्लू के लक्षण एक जैसे ही होते हैं, लेकिन स्वाइन फ्लू में यह देखा जाता है कि जुकाम बहुत तेज होता है। नाक ज्यादा बहती है। पीसीआर टेस्ट के माध्यम से ही यह पता चलता है कि किसी को स्वाइन फ्लू है। स्वाइन फ्लू होने के पहले 48 घंटों के भीतर इलाज शुरू हो जाना चाहिए। पांच दिन का इलाज होता है, जिसमें मरीज को टेमीपल्डू दी जाती है।

स्वाइन फ्लू से बचाव और इसका इलाज

- साफ-सफाई का ध्यान रखा जाए और फ्लू के शुरुआती लक्षण दिखते ही सावधानी बरती जाए, तो इस बीमारी के फैलने के चांस न के बराबर हो जाते हैं।
- जब भी खांसी या छींक आए रूमाल या टिश्यू पेपर यूज करें।
- इस्तेमाल किए मास्क या टिश्यू पेपर को ढकन वाले डस्टबिन में फेंकें।
- थोड़ी-थोड़ी देर में हाथ को साबुन और पानी से धोते रहें।
- लोगों से मिलने पर हाथ मिलाने, गले लगने या चूमने से बचें।
- फ्लू के शुरुआती लक्षण दिखते ही अपने डॉक्टर से संपर्क करें।

कब तक रहता है वायरस

एच1एन1 वायरस स्टील, प्लास्टिक में 24 से 48 घंटे, कपड़े और पेपर में 8 से 12 घंटे, टिश्यू पेपर में 15 मिनट और हाथों में 30 मिनट तक एक्टिव रहते हैं। इन्हें खत्म करने के लिए डिजॉेंट, एल्कोहॉल, ब्लीच या साबुन का इस्तेमाल कर सकते हैं। किसी भी मरीज में बीमारी के लक्षण इन्फेक्शन के बाद 1 से 7 दिन में डिवेलप हो सकते हैं। लक्षण दिखने के 24 घंटे पहले और 8 दिन बाद तक किसी और में वायरस के ट्रांसमिशन का खतरा रहता है।

आयुर्वेद

ऐसे करें बचाव

इनमें से एक समय में एक ही उपाय आजमाएं। 4-5 तुलसी के पत्ते, 5 ग्राम अरक, चुटकी भर काली मिर्च पाउडर और इतनी ही हल्दी को एक कप पानी या चाय में उबालकर दिन में दो-तीन बार पिएं। गिलोय (अमृता) बेल की डंडी को पानी में उबाल या छानकर पिएं। गिलोय सत्व दो रत्ती यानी चौथाई ग्राम पौना गिलास पानी के साथ लें। 5-6 पत्ते तुलसी और काली मिर्च के 2-3 दाने पीसकर चाय में डालकर दिन में दो-तीन बार पिएं। आधा चम्मच हल्दी पौना गिलास दूध में उबालकर पिएं। आधा चम्मच हल्दी गरम पानी या शहद में मिलाकर भी लिया जा सकता है।

Swine flu alert!



स्वाइन फ्लू एक वार फिर देश में पांव पसार रहा है, जिससे मौत का आंकड़ा भी बढ़ता जा रहा है। दिन-प्रतिदिन स्वाइन फ्लू के नए-नए मामले सामने आते जा रहे हैं। फ्लू से डरने के बजाय जरूरत इसके लक्षणों के बारे में जानने और सावधानी बरतने की है।

यह रहें सावधान

5 साल से कम उम्र के बच्चे, 65 साल से ज्यादा उम्र के बुजुर्ग और गर्भवती महिलाएं। जिन लोगों को निम्न में से कोई बीमारी है, उन्हें अतिरिक्त सावधानी बरतनी चाहिए - फेफड़ों, किडनी या दिल की बीमारी मस्तिक संबंधी (न्यूरोलॉजिकल) बीमारी मसलन, पार्किंसन कमजोर प्रतिरोधक क्षमता वाले लोग डायबीटीज ऐसे लोग जिन्हें पिछले 3 साल में कभी भी अस्थिमा की शिकायत रही हो या अभी भी हो। ऐसे लोगों को फ्लू के शुरुआती लक्षण दिखते ही डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिए। गर्भवती महिलाओं का प्रतिरोधक तंत्र (इम्यून सिस्टम) शरीर में होने वाले हॉर्मोन संबंधी बदलावों के कारण कमजोर होता है। खासतौर पर गर्भावस्था के तीसरे चरण यानी 27वें से 40वें सप्ताह के बीच उन्हें ज्यादा ध्यान रखने की जरूरत है।

चिंता की बात

इस बीमारी से लड़ने के लिए सबसे जरूरी है दिमाग से डर को निकालना। ज्यादातर मामलों में वायरस के लक्षण कमजोर ही दिखते हैं। जिन लोगों को स्वाइन फ्लू हो भी जाता है, वे इलाज के जरिए सात दिन में ठीक हो जाते हैं। कुछ लोगों को तो अस्पताल में एडमिट भी नहीं होना पड़ता और घर पर ही सामान्य बुखार की दवा और आराम से ठीक हो जाते हैं। कई बार तो यह ठीक भी हो जाता है और मरीज को पता भी नहीं चलता कि उसे स्वाइन फ्लू था। डब्ल्यूएचओ की रिपोर्ट बताती है कि जिन लोगों का स्वाइन फ्लू टेस्ट पॉजिटिव आता है, उनमें से इलाज के दौरान मरने वालों की संख्या केवल 0.4 फीसदी ही है। यानी एक हजार लोगों में चार लोग। इनमें भी ज्यादातर केस ऐसे होते हैं, जिनमें पेशेंट पहले से ही हार्ट या किसी दूसरी बीमारी की गिरफ्त में होते हैं या फिर उन्हें बहुत देर से इलाज के लिए लाया गया होता है।

‘कन्नप्पा’ दिसंबर में होगी रिलीज ...

नई दिल्ली। ‘कन्नप्पा’ विष्णु मांचू की महत्वाकांक्षी परियोजना है। इस बहुप्रतीक्षित फिल्म को और खास बनाने के लिए विष्णु मांचू पूरी मेहनत कर रहे हैं। फिल्म में कई दिग्गज सितारों की महत्वपूर्ण भूमिकाएं हैं। गुरुवार, 18 जुलाई को विष्णु मांचू ने अपनी आगामी बड़े बजट की फिल्म ‘कन्नप्पा’ की रिलीज की घोषणा की। उन्होंने पोस्ट साझा करते हुए यह जानकारी दी कि फिल्म दिसंबर 2024 में रिलीज होगी। ‘कन्नप्पा’ एक पौराणिक फिल्म है, जो पूरी होने वाली है। मई में फिल्म का टीजर प्रतिष्ठित कान्स फिल्म फेस्टिवल में दिखाया गया था। बाद में 14 जून को भारत में टीजर रिलीज किया गया।

हॉलीवुड मसाला फिर साझा कीं शानदार तस्वीरें...



लॉस एंजिल्स। किम कार्दशियन और उनकी बहन क्लोई कार्दशियन का भारत में काफी अच्छा समय बीता था। इसकी झलकियां अब किम लगातार अपने सोशल मीडिया हैंडल पर साझा कर रही हैं। किम ने अपने सोशल मीडिया हैंडल पर कई तस्वीरें साझा की हैं। इन तस्वीरों से पहले उसने एक्स हैंडल पर एक तस्वीर साझा की थी, जिसमें वह एक ट्रे में चंदन पाउडर और टीका पकड़े हुए नजर आई थीं। वह एक स्केच बोडीकॉन आउटफिट में बेहद खूबसूरत लग रही थीं।

लाइफ Style

सोनम

कपड़े उधार लेकर पहना करती थीं एंजेली मुंबई

बॉलीवुड अभिनेत्री सोनम कपूर अभिनय की दुनिया में बड़ा नाम कमा चुकी हैं। अभिनय के साथ साथ वे फैशन की दुनिया की भी बेहतरीन हस्ती हैं। हाल ही में, अभिनेत्री ने अपने स्टाइल के बारे में बात की कि वे कैसे कपड़े चुनती हैं और इस बीच की सभी चीजें कैसे सामंती हैं।

सोनम ने कहा, ‘मैं सिर्फ वही पहनना चाहती थी, जो मुझे अपने जाने-पहचाने डिजाइनरों से पसंद था। यह सिर्फ मैं ही थी जो मेरी मां से मिली शिक्षा और फैशन के प्रति मेरे जुनून से प्रभावित थी। मैं अंतरराष्ट्रीय और भारतीय दोनों ही तरह के फैशन डिजाइनरों को स्टार मानती थी, क्योंकि मैं अपनी मां के जैरे उन्हें पसंद करती हुई बड़ी हुई हूँ। यह किसी छवि को पेश करने के बारे में नहीं था, यह फैशन के प्रति मेरे सच्चे प्यार के बारे में था।’ उन्होंने आगे कहा, ‘मुझे एहसास हुआ कि लोग अक्सर कपड़े उधार नहीं लेते, इसलिए मैंने उन्हें उधार लेना शुरू कर दिया। हर समय सब कुछ खरीदना समझदारी नहीं थी। मैंने बहुत कुछ खरीदा, लेकिन उधार लेना अधिक व्यावहारिक था। यह प्रथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आम थी, लेकिन भारत में नहीं, इसलिए मैंने वही किया जो उस समय सही लगा। मैं 20 साल की लड़की थी, बिना किसी रणनीतिक इरादे के बस फैशन के प्रति अपने जुनून का पीछा कर रही थी।’ सोनम अब एक वैश्विक फैशन आइकन हैं और अंतरराष्ट्रीय मीडिया द्वारा उनके बेहतरीन फैशन संस और ब्रांड्स पर उनके जबर्दस्त प्रभाव के लिए उनका सम्मान किया जाता है। उनके लगातार शानदार कपड़ों ने उन्हें दुनिया भर के शीर्ष फैशन ब्रांड्स में पसंदीदा बना दिया है।



एमसीयू में रूसो ब्रदर्स की वापसी की खबर से फैंस में हलचल...

लॉस एंजिल्स। मार्वल के प्रशंसकों के लिए एक बड़ी खबर सामने आ रही है। रूसो बंधु यानी जो रूसो और एंथनी रूसो मार्वल सिनेमैटिक यूनिवर्स में वापसी कर सकते हैं। दोनों साथ मिलकर 2014 में रिलीज हुई ‘केप्टन अमेरिका: द विंटर सोल्जर’, 2016 में आई ‘केप्टन अमेरिका: सिविल वॉर’, 2018 में आई ‘एवेंजर्स: इनफिनिटी वॉर’ और 2019 में आई ‘एवेंजर्स: एंडगेम’ का निर्देशन कर चुके हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, जो और एंथनी ये साल 2026 और 2027 में आने वाली दो ‘एवेंजर्स’ फिल्मों को बनाने के सिलसिले में बातचीत चल रही है। हालांकि, रूसो बंधुओं की प्रोडक्शन कंपनी एजीबीओ की ओर से फिलहाल इस मामले में कोई टिप्पणी नहीं की गई है। कयास लगाए जा रहे हैं कि यह दोनों ही फिल्में जो और एंथनी की ही ‘एवेंजर्स: इनफिनिटी वॉर’ और ‘एवेंजर्स: एंडगेम’ से जुड़ी होंगी।

क्या जल्द शादी करने वाली हैं श्रद्धा..?

मुंबई। श्रद्धा कपूर इन दिनों अपनी फिल्म ‘स्त्री’ के मोस्ट अवैटेड सीक्वल ‘स्त्री 2’ की रिलीज के लिए तैयार हैं। 15 अगस्त को सिनेमाघरों में आने वाली इस फिल्म में अभिनेत्री कॉमेडी और हॉरर का तड़का लगाने के लिए तैयार हैं। निजी जीवन की बात करें तो श्रद्धा के बारे में पिछले काफी समय से यह अफवाह है कि वह स्क्रिप्ट राइटर राहुल मोदी को डेट कर रही हैं। अब ‘स्त्री 2’ के ट्रेलर लॉन्च के मौके पर उन्होंने अपनी शादी के प्लान के बारे में खुलकर बात की है। अपने रिश्ते और शादी के प्लान के बारे में पूछे गए सवाल का जवाब देते हुए, अभिनेत्री ने मजाकिया अंदाज में जवाब दिया। उन्होंने कहा, ‘वह स्त्री है, उसे जब दुल्हन बनना है वो बनेगी’। इससे पहले श्रद्धा ने इंस्टाग्राम पर राहुल मोदी के साथ अपने रिश्ते को आधिकारिक तौर पर जाहिर किया था।



महाराजा ओटीटी पर नंबर-1 पर कर रही है ट्रेड

नई दिल्ली। साल 2024 में सिनेमाघरों में एक क्राइम-थ्रिलर फिल्म आई थी। 20 करोड़ रुपए के बजट में बनी इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर छप्परफाड़ कमाई की थी। इस फिल्म ने वर्ल्डवाइड 104.84 करोड़ रुपए का आंकड़ा पार किया था और अब ये फिल्म ओटीटी पर भौकाल काट रही है। जी हां! ओटीटी पर ये फिल्म टॉप 10 ट्रेडिंग फिल्मों की लिस्ट में पहले नंबर पर है। इस फिल्म का नाम ‘महाराजा’ है। विजय सेतुपति ने इस फिल्म में लीड रोल प्ले किया है। वहीं, अनुराग कश्यप ने खूबार विलेन की भूमिका निभाई है। इस फिल्म की खास बात ये है कि इसकी कहानी एकदम यूनीक है और सर्रास के साथ-साथ इस फिल्म में एक्शन का तड़का भी लगाया गया है। यदि आप ये फिल्म देखना चाहते हैं तो ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स पर देख सकते हैं।

अमिताभ नहीं थे दीवार के लिए पहली पसंद इस सुपरस्टार ने फिल्म करने से किया था इंकार

नई दिल्ली। अमिताभ बच्चन के करियर की कुछ ऐसी फिल्मों हैं जिनकी कल्पना उनके बिना तो की ही नहीं जा सकती। उनका एंथी यंगमैन अवतार और डायलॉग बोलने का अंदाज और स्टाइल सब ही बेमिसाल रहे हैं। लेकिन जैसा फिल्म इंडस्ट्री में अकसर होता है कि एक फिल्म के लिए कई सितारों को अग्रीज किया जाता है और फिर फिल्म किस स्टार की झोली में जाती है ये किसी को पता नहीं होता है। ऐसा ही कुछ अमिताभ बच्चन की फिल्म दीवार के साथ भी हुआ। दीवार में अमिताभ बच्चन के किरदार को इतना प्यार मिला कि उनके डायलॉग आज तक सुने जा सकते हैं। कोरोड रुपए था, जबकि फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर 7.50 करोड़ रुपए का कलेक्शन किया था। इस तरह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर सुपरहित रही थी। बताया जाता है कि फिल्म के निर्माताओं ने इस फिल्म के लिए पहले शत्रुघ्न सिन्हा को अग्रोच किया था। लेकिन शत्रुघ्न सिन्हा उन दिनों कुछ दूसरे प्रोजेक्ट में व्यस्त थे, जिस वजह से उन्होंने फिल्म करने से इनकार कर दिया। फिर जब ये फिल्म अमिताभ बच्चन के पास पहुंची तो उन्होंने इसके लिए हां कह दी और बाकी सब इतिहास बन गया। अमिताभ बच्चन की सबसे कामयाब फिल्मों में दीवार का नाम गिना जाता है और इसके डायलॉग तो बेहतरीन रहे हैं। फिल्म की कहानी और संवाद सलीम-जावेद के थे।



लंदन मैडम तुसाद में सजेगा राम चरण का मोम का पुतला!

नई दिल्ली। लंदन के मैडम तुसाद में बॉलीवुड और बॉलीवुड के तमाम सुपरस्टार्स के मोम के पुतले अभी तक सजाए जा चुके हैं, जिनमें अमिताभ बच्चन से लेकर करीना कपूर खान, दीपिका पादुकोण, रणवीर सिंह, ऋतिक रोशन और प्रियंका चोपड़ा के अलावा भी कई भारतीय स्टार्स शामिल हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, बॉलीवुड, हॉलीवुड के बाद अब टॉलीवुड स्टार राम चरण का मोम की प्रतिमा लंदन के मैडम तुसाद में लगाई जाएगी। अभी यह तय नहीं हुआ है कि स्टार के मोम के पुतले को किस तरह का लुक दिया जाएगा। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, अमिताभ बच्चन बॉलीवुड के ऐसे पहले मेगास्टार हैं, जिनका मैडम तुसाद म्यूजियम में सबसे पहले स्टैच्यू लगा था। जब अमिताभ बच्चन का मैडम तुसाद में मोम की प्रतिमा का अनावरण हुआ था, तब बिग बी ने अपने मोम के पुतले के बगल में खड़े होकर शानदार पोज दिए थे। बताया जाता है कि अमिताभ बच्चन को मोम की प्रतिमा को देखने के लिए हर साल संभ्रमण में 25 लाख से ज्यादा सख्या में लोग आते हैं। अमिताभ के ही स्टैच्यू को ध्यान में रखते हुए उनके मोम के पुतले को बनाया गया था। सलमान खान का भी मैडम तुसाद में स्टैच्यू लगाया जा चुका है। सलमान ने भी अपने मोम के पुतले के साथ कई फोटो क्लिक करवाई थीं। उनके मोम के पुतले को बिल्कुल उनकी तरह ही स्टैच्यू में बनाया गया था। सलमान के मोम के पुतले को ब्लैक रंग की सैंडो के साथ ब्लैक जींस का लुक दिया गया था।



सिद्धार्थ शुक्ला को याद कर रो पड़ीं जैस्मिन मसीन...

नई दिल्ली। एक्टर सिद्धार्थ शुक्ला का निधन हर किसी के लिए शॉकिंग था। जैस्मिन मसीन उनके साथ दिल से दिल तक में काम कर चुकी हैं। जब यह दुखद खबर आई तो जैस्मिन मुंबई में नहीं थीं। वह कश्मीर गई थीं। उन्होंने इंटरव्यू के दौरान वो वक्त याद किया तो बुरी तरह रो पड़ीं। जैस्मिन ने बताया कि वहां इंटरनेट ना होने की वजह से उन्हें कुछ पता नहीं चल सका था। पर मुंबई एयरपोर्ट पर पहुंची तो लोगों की सुगाबुगाहट कान में पड़ी। जब सच में खबर मिली तो वह सुन्न पड़ गई थीं। मैं यह सच स्वीकार ही नहीं कर पाई कि वह जा चुके हैं। उनकी मौत ने मुझे जीवन की सबसे बड़ी सीख दी कि कुछ भी परमानेंट नहीं है। तो वक्त रहते सारे गिले-शिकवे दूर कर लेने चाहिए, क्योंकि वक्त का कुछ पता नहीं। इंसान चला जाता है पर आप दर्द और पछतावे के साथ रह जाते हो कि काश बात कर ली होती। जैस्मिन ने बताया कि दिल से दिल तक में सिद्धार्थ ने उनका बहुत सपोर्ट किया था। वह नर्वस हो जाती थीं तो सिद्धार्थ उन्हें मोटिवेट करते थे। वह बैनटी वैन में ना जाकर उन्हें सपोर्ट करते थे। जैस्मिन बोलतीं, सेट पर वह मेरे बेस्ट फ्रेंड थे। हम साथ में खाते थे, पैक-अप के बाद साथ में जाते थे।

रूही पर टूटेगा दुखों का पहाड़, पौदार हाउस में ऐसे होगी रोहित की एंटी

नई दिल्ली। टीवी सौरियल ‘रे रिश्ता क्या कहलाता है’ में रूही पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ेगा। उसकी आखिरी उम्मीद भी उससे छिन जाएगी। रूही के साथ-साथ बड़े पापा भी निराश हो जाएंगे। लेकिन, सवाल यह उठता है कि ऐसा क्या होगा जिसकी वजह से रूही और बड़े पापा दोनों परेशान हो जाएंगे? रे रिश्ता क्या कहलाता है के आने वाले एपिसोड में रोहित की वापसी होगी। जब रूही को पता चलना कि रोहित जिंदा है तब उसकी अरमान को पाने की आखिरी उम्मीद खल हो जाएगी। वही बड़े पापा, रूही को पौदार हाउस से दूर रखना चाहते हैं, लेकिन रोहित के वापस आने की वजह से वह ऐसा नहीं कर पाएंगे इसलिए वह दुखी हो जाएंगे। आने वाले एपिसोड में दिखाया जाएगा कि रोहित का एक्सर्साइट हो जाता।

‘हम्प्टी शर्मा की दुल्हनिया’ में आलिया ने निभाई हैं अहम भूमिका

शादी पर आधारित हैं इन फिल्मों की कहानी, गुदगुदाती भी हैं और रुलाती भी

2 स्टेट्स : ‘2 स्टेट्स’ में अलग-अलग संस्कृति से आने वाले एक पंजाबी लड़के और एक तमिल लड़की की कहानी दिखाई गई है, जिनकी शादी में परिवार द्वारा बाधाएं डाली जाती हैं, लेकिन वे दोनों इससे पार पा लेते हैं। इस फिल्म में अर्जुन कपूर और आलिया भट्ट ने मुख्य किरदार निभाया था। इसका निर्देशन अभिषेक वर्मान ने किया था। यह फिल्म 2014 में रिलीज हुई थी।

हम्प्टी शर्मा की दुल्हनिया : ‘हम्प्टी शर्मा की दुल्हनिया’ में भी आलिया भट्ट ने अहम भूमिका निभाई हैं। इस फिल्म में उन्होंने अंबाला शहर की एक लड़की का किरदार अदा किया है, जो दिल्ली के एक लड़के से मिलती हैं और दोनों एक-दूसरे को दिल दे बैठते हैं।

नई दिल्ली। बॉलीवुड की कुछ फिल्मों में शादी के विषय पर बढ़िया फिल्में बन चुकी हैं। ‘2 स्टेट्स’, ‘हम्प्टी शर्मा की दुल्हनिया’, ‘तनु वेड्स मनु’ और ‘बैंड बाजा बारात’ शादी पर आधारित अच्छी हिंदी फिल्में हैं, जो दर्शकों को गुदगुदाने के साथ-साथ उन्हें रुलाती भी हैं। चारों फिल्मों का विषय मले ही एक है, लेकिन कहानी एकदम अलग है। ‘2 स्टेट्स’, ‘हम्प्टी शर्मा की दुल्हनिया’, ‘तनु वेड्स मनु’ और ‘बैंड बाजा बारात’ की कहानी शादी के इर्द-गिर्द घूमती हैं। इन चारों फिल्मों को दर्शकों ने खूब पसंद किया था।

इसके बाद कहानी दोनों की शादी तक पहुंचती है। इसमें आलिया भट्ट के अलावा वरुण धवन और दिवंगत सिद्धार्थ शुक्ला ने भी अभिनय किया था।

तनु वेड्स मनु : ‘तनु वेड्स मनु’ के तो नाम से ही साफ हो जाता है कि यह फिल्म शादी पर आधारित है। फिल्म की कहानी एक एन.आर.आई डॉक्टर मनु के शादी करने के इर्द-गिर्द घूमती है। मनु विदेश से भारत में दुल्हन टूटकर शादी करने आता है, जहां उसकी मुलाकात तनु से होती है। इस

आधारित है। फिल्म की कहानी एक एन.आर.आई डॉक्टर मनु के शादी करने के इर्द-गिर्द घूमती है। मनु विदेश से भारत में दुल्हन टूटकर शादी करने आता है, जहां उसकी मुलाकात तनु से होती है। इस

फिल्म में आर माधवन, कंगना, स्वरा भास्कर, जिमी शेरगिल और दीपक डोबरियाल ने शानदार अभिनय किया है। यह एक बढ़िया कॉमेडी फिल्म है, जिसका निर्देशन आनंद एल राय ने किया है।

बैंड बाजा बारात : ‘तनु वेड्स मनु’ की ही तरह ‘बैंड बाजा बारात’ के नाम से भी रफ्त है कि यह फिल्म भी शादी पर ही आधारित है। इसकी कहानी दो वेडिंग प्लानर श्रुति कक्कड़ और बिट्टू शर्मा के बारे में है। बिजनेस करते-करते दोनों एक-दूजे के प्यार में पड़ जाते हैं। इस वजह से दोनों के पेशवर संबंधों पर भी असर पड़ता है। फिल्म में अनुष्का शर्मा और रणवीर सिंह ने मुख्य किरदार निभाया था। इसका निर्देशन मनोज शर्मा ने किया है।

संजीवनी टुडे

बजट 2024 : सस्ती ईवी से लेकर हेल्थ इंश्योरेंस तक... मिलेगी कई रियायतें!

स्वर्ण संक्षेप
 100 मेगावाट हाइड्रिड परियोजना मिली

एजेंसी ►► नई दिल्ली
 23 जुलाई को केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल का पहला बजट पेश करेगी। इससे पहले जब उन्होंने इसी साल फरवरी में अंतरिम बजट पेश किया था, तो उसमें टैक्स में किसी प्रकार का बदलाव नहीं किया था, लेकिन अब पूर्णकालिक बजट होने के चलते उम्मीद की जा रही है कि मध्यम वर्ग को टैक्स में कुछ बड़ी छूट मिल सकती है। इसके अलावा ईवी खरीदने की सोच रहे लोगों पहले से सस्ती की कीमत में ईवी मिल सकती है। नए टैक्स रिजिम को व्यक्तिगत टैक्सपेयर्स के लिए अधिक आकर्षक बनाने के उद्देश्य से, सरकार स्टैटड डिविडेंस को 50,000 रुपये से बढ़ाकर

नई दिल्ली। केपी समूह की नवीकरणीय ऊर्जा कंपनी केपीआई प्रोन एनर्जी को एथर इंडस्ट्रीज से 100 मेगावाट की हाइड्रिड ऊर्जा परियोजना का ठेका मिला है। कंपनी ने शुक्रवार को शेयर बाजार को दी सूचना में कहा कि आदेश की शर्तों के अनुसार परियोजनाओं को वित्त वर्ष 2024-25 में विभिन्न किस्मों में पूरा किया जाना है।

एचडीएफसी बैंक: सीएसआर खर्च 945 करोड़ रुपये के पार

नई दिल्ली। निजी क्षेत्र के एचडीएफसी बैंक ने वित्त वर्ष 2023-24 के लिए 945.31 करोड़ रुपये का सीएसआर खर्च दर्ज किया है। यह वित्त वर्ष 2022-23 की तुलना में लगभग 125 करोड़ रुपये अधिक है। 28 राज्यों व आठ केंद्र शासित प्रदेशों में फैली इसकी विभिन्न पहलों ने 10 करोड़ से अधिक लोगों के जीवन को प्रभावित किया है।

विदेशी मुद्रा मंडार बढ़कर हुआ 666.85 अरब डॉलर

मुंबई। देश का विदेशी मुद्रा भंडार 12 जुलाई को समाप्त सप्ताह में 9.70 अरब डॉलर उछलकर अबतक के उच्चतम स्तर 666.85 अरब डॉलर हो गया। भारतीय रिजर्व बैंक ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। कुल मुद्रा भंडार 5.16 अरब डॉलर बढ़कर 657.15 अरब डॉलर हो गया था। यह इससे पहले के उच्चतम स्तर 655.82 अरब डॉलर को पार कर गया।

हांगकांग, जापान और द.कोरिया में विदेशी केंद्र खोलने की योजना

कोलकाता। देश में कंपनी सचिवों के लिए स्थापित पेशेवर संस्था 'भारतीय कंपनी सचिव संस्थान' के अध्यक्ष बी नरसिम्हन ने शुक्रवार को कहा कि निकट भविष्य में संस्थान के तीन और विदेशी केंद्र खोलने की योजना है। नरसिम्हन ने संवाददाताओं से कहा कि आईसीएसआई के ये प्रस्तावित केंद्र हांगकांग, जापान और दक्षिण कोरिया में खोले जाएंगे।

एनआरआई ने गरा भारत का खजाना, चार गुना बढ़ा बैंक डिपॉजिट

नई दिल्ली। विदेशी में काम करने वालों यानी अनिवासी भारतीयों की ओर से बैंक जमा इस वर्ष अप्रैल-मई के दौरान चार गुना बढ़ी है। इस दौरान एनआरआई जमा 2.7 अरब डॉलर रही है जो पिछले वर्ष समान अवधि में 0.6 अरब डॉलर थी। इससे देश के विदेशी मुद्रा भंडार को मजबूती मिल रही है।

धान का रकबा अब तक सात प्रतिशत बढ़ा

नई दिल्ली। बेहतर मानसूनी बारिश के कारण चालू खरीफ मौसम (ग्रोमकालीन रकबा) में अब तक धान का रकबा सात प्रतिशत बढ़कर 166.06 लाख हेक्टेयर हो गया। कृषि मंत्रालय के आंकड़ों में यह जानकारी दी गई है। पिछले साल 19 जुलाई तक धान की कुल रकबा 155.65 लाख हेक्टेयर में हुई थी। शुक्रवार को कृषि विभाग ने 19 जुलाई 2024 तक खरीफ फसलों के तहत खेती के रकबे में हुई वृद्धि के आंकड़े जारी किये। देहलीन का रकबा बढ़कर 85.79 लाख हेक्टेयर हो गया है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने विकसित की दो किस्में देश भर में टमाटर 90 पार, 'संकर' करेगा बेड़ा पार, 21 दिन तक नहीं होगा खराब

एजेंसी ►► नई दिल्ली
 आइसीएआर की ओर से विकसित टमाटर की ये दो संकर किस्में निकट भविष्य में टमाटर संकट को समाप्त करने में अहम भूमिका निभाएंगी। मीडिया की रिपोर्ट के अनुसार, आइसीएआर के तहत बंगलुरु स्थित एक संस्थान की ओर से विकसित टमाटर की दो संकर किस्में भविष्य में टमाटर के संकट से बचा सकती हैं। इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि टमाटर के इस संकर किस्म को बड़े पैमाने पर अपनाने के साथ इसकी खेती के रकबे को बढ़ाना होगा। टमाटर की इस संकर किस्म को भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान की ओर से विकसित किया गया है।

21 दिनों तक खराब नहीं संकर टमाटर
 दावा यह किया जा रहा है कि संकर टमाटर की किस्में अर्का रक्षक और अर्का अमेड की सेल्फ लाइन तीन हफ्ते में और यह 21 दिनों तक खराब नहीं होता। इसकी व्यापकता यह है कि मानसून की भारी बारिश में सफलाई वेध बाधित होने के बाद भी इसे कई दिनों तक स्टोर करके रखा जा सकता है। आइसीएआर के महाविदेशक हिमांशु पाठक ने का कहना है कि हमने टमाटर की एक ऐसी किस्म विकसित की है, जिसकी सेल्फ लाइफ (खराब नहीं होने का समय) तीन हफ्ते है। हमें इन किस्मों के तहत रकबे को बढ़ाने की जरूरत है।

सात हजार हेक्टेयर में किया परीक्षण
 आइसीएआर के वरिष्ठ वैज्ञानिक चंद्रशेखर सी के अनुसार, साल 2012 में विकसित भारत का पहला ट्रिपल रोग प्रतिरोधी टमाटर एफ-1 हाइड्रिड अर्का रक्षक फिलहाल 7,000 हेक्टेयर में उगाया जाता है। इस हाइड्रिड तकनीक का लाइसेंस 11 कंपनियों को दिया गया है। इनके बारे में अनुमान है कि साल 2012-22 के दौरान बीज की बिक्री से इनका कारोबार 3,600 करोड़ रुपये रहा है। तीन साल पहले जारी अर्का अमेड तीन हफ्ते की लंबी सेल्फ लाइफ देता है और दूरदराज के बाजारों के अनुकूल है। टमाटर की ये दोनों किस्में लीक कल बायरस, बैक्टीरियल विल्ट और अर्ला ब्लाइट सहित कई बीमारियों के लिए प्रतिरोधक क्षमता प्रदान करती हैं।

हाइड्रिड तकनीक का लाइसेंस 11 कंपनियों को दिया गया
 पहला ट्रिपल रोग प्रतिरोधी टमाटर एफ-1 हाइड्रिड अर्का रक्षक की खेती

गुजरात में जलधरू होगा चिप विनिर्माण...
 उद्घाटन करने उल्लेखनीय ब्रिटेन की उन्नीसवीं सरकार उद्योग की सभी जसुरी मदद देगी। माइक्रोने टेक्नोलॉजी, टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स और सीजी पावर ने इस सम्मेलन के लिए राज्य सरकार के साथ सहयोग किया है। ये सभी कंपनियों गुजरात में अपने सेमीकंडक्टर संयंत्र स्थापित कर रही हैं।

गोधिनगर। गुजरात सरकार ने सेमीकंडक्टर क्षेत्र के लिए अलग से नीति लाने की और राज्य में जलधरू ही चिप निर्माण शुरू होगा। गुजरात के मुख्यमंत्री कानूजी भट्ट ने शुक्रवार को यहां महाराष्ट्र मंदिर कॉन्वेंशन सेंटर में एक दिवसीय 'गुजरात सेमीकंडक्टर कॉन्फ्रेंस 2024' का उद्घाटन करने उल्लेखनीय ब्रिटेन की उन्नीसवीं सरकार उद्योग की सभी जसुरी मदद देगी। माइक्रोने टेक्नोलॉजी, टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स और सीजी पावर ने इस सम्मेलन के लिए राज्य सरकार के साथ सहयोग किया है। ये सभी कंपनियों गुजरात में अपने सेमीकंडक्टर संयंत्र स्थापित कर रही हैं।

रिलायंस जियो को 5445 करोड़ रुपये का मुनाफा
 देश की सबसे बड़ी दूरसंचार सेवा प्रदाता रिलायंस जियो इन्फोकॉम का चालू वित्त वर्ष की जून तिमाही में एक आधा अरब रुपये का मुनाफा दर्ज हुआ। रिलायंस जियो ने 12 प्रतिशत बढ़कर 5,445 करोड़ रुपये पर आया। रिलायंस जियो ने शुक्रवार को अप्रैल-जून तिमाही के अपने वित्तीय नतीजों की सूचना दी। आलोचकों ने कंपनी का परिचालन राजस्व सालाना आधार पर 10 प्रतिशत बढ़कर 26,478 करोड़ रुपये हो गया। रिलायंस जियो के लिए रिलायंस जियो का शुद्ध लाभ 5,445 करोड़ रुपये रहा, जो सालाना आधार पर 11.9 प्रतिशत और मार्च तिमाही की तुलना में दो प्रतिशत अधिक है।

अमेरिकी मुद्रा में मजबूती और घरेलू शोध बाजार में कमजोर रुख से रुपए में गिरावट आई
 एजेंसी ►► मुंबई
 विदेशी बाजारों में अमेरिकी मुद्रा की तुलना में रुपया शुक्रवार को तीन पैसे टूटकर 83.66 प्रति डॉलर के अपने सर्वकालिक निचले स्तर पर बंद हुआ। कच्चे तेल की कीमतों में तेजी के बीच अमेरिकी मुद्रा में मजबूती और घरेलू शोध बाजार में कमजोर रुख से रुपए में गिरावट आई। विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने कहा कि कमजोर घरेलू बाजार और तेल की ऊंची कीमतों ने रुपए पर दबाव डाला। हालांकि, भारतीय रिजर्व बैंक के हस्तक्षेप से घरेलू मुद्रा में तेज गिरावट पर रोक लगी। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 83.64 प्रति डॉलर पर खुला। दिन में कारोबार के दौरान यह 83.60 के उच्चस्तर तक गया तथा 83.66 प्रति डॉलर के निचले स्तर तक आया।

रुपया सर्वकालिक निचले स्तर पर तीन पैसे टूटकर 83.66 प्रति डॉलर
 एजेंसी ►► मुंबई
 विदेशी बाजारों में अमेरिकी मुद्रा की तुलना में रुपया शुक्रवार को तीन पैसे टूटकर 83.66 प्रति डॉलर के अपने सर्वकालिक निचले स्तर पर बंद हुआ। कच्चे तेल की कीमतों में तेजी के बीच अमेरिकी मुद्रा में मजबूती और घरेलू शोध बाजार में कमजोर रुख से रुपए में गिरावट आई। विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने कहा कि कमजोर घरेलू बाजार और तेल की ऊंची कीमतों ने रुपए पर दबाव डाला। हालांकि, भारतीय रिजर्व बैंक के हस्तक्षेप से घरेलू मुद्रा में तेज गिरावट पर रोक लगी। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 83.64 प्रति डॉलर पर खुला। दिन में कारोबार के दौरान यह 83.60 के उच्चस्तर तक गया तथा 83.66 प्रति डॉलर के निचले स्तर तक आया।

विप्रो का लाभ 4.6 प्रतिशत बढ़कर 3,003.2 करोड़ रुपए, राजस्व घटा
 एजेंसी ►► बंगलुरु
 सूचना प्रौद्योगिकी कंपनी विप्रो का एकीकृत शुद्ध लाभ चालू वित्त वर्ष की जून तिमाही में सालाना आधार पर 4.6 प्रतिशत बढ़कर 3,003.2 करोड़ रुपये रहा। बंगलुरु की कंपनी की आय हालांकि 2024-25 की पहली तिमाही में 3.8 प्रतिशत घटकर 21,963.8 करोड़ रुपये रही कंपनी ने गुणवत्ता को बचाने में कहा कि उसे आगामी सितंबर तिमाही में आईटी सेवा व्यवसाय खंड से 260-265.2 करोड़ डॉलर तक आमदनी की उम्मीद है।

विप्रो के सीईओ और प्रबंध निदेशक श्रीनी पलिया ने कहा कि कंपनी ने एक और तिमाही में एक अरब अमेरिकी डॉलर से अधिक के बड़े सौदे हासिल किए। उन्होंने कहा कि कंपनी के शीर्ष खातों में वृद्धि जारी है, साथ ही 'अमेरिका 1' रणनीतिक बाजार इकाई बैंक, वित्तीय सेवा और उपभोक्ता क्षेत्रों में वृद्धि हुई।

पेटोएम का घाटा बढ़कर 840 करोड़ रुपए
 पेटोएम की मूल कंपनी वन कन्सुलिंग्स का घाटा चालू वित्त वर्ष की अप्रैल-जून तिमाही में बढ़कर 840 करोड़ रुपये हो गया। बीते वित्त वर्ष की समाप्त तिमाही में कंपनी को 358.4 करोड़ रुपये का घाटा हुआ था। पेटोएम ने शुक्रवार को शेयर बाजार को बी सूचना में कहा कि उसकी एकीकृत आय 33.48 प्रतिशत घटकर 1,639.1 करोड़ रुपये रही, जो पिछले वित्त वर्ष की समाप्त तिमाही में 2,464.2 करोड़ रुपये थी।

अमेरिकी मुद्रा में मजबूती और घरेलू शोध बाजार में कमजोर रुख से रुपए में गिरावट आई
 एजेंसी ►► मुंबई
 विदेशी बाजारों में अमेरिकी मुद्रा की तुलना में रुपया शुक्रवार को तीन पैसे टूटकर 83.66 प्रति डॉलर के अपने सर्वकालिक निचले स्तर पर बंद हुआ। कच्चे तेल की कीमतों में तेजी के बीच अमेरिकी मुद्रा में मजबूती और घरेलू शोध बाजार में कमजोर रुख से रुपए में गिरावट आई। विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने कहा कि कमजोर घरेलू बाजार और तेल की ऊंची कीमतों ने रुपए पर दबाव डाला। हालांकि, भारतीय रिजर्व बैंक के हस्तक्षेप से घरेलू मुद्रा में तेज गिरावट पर रोक लगी। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 83.64 प्रति डॉलर पर खुला। दिन में कारोबार के दौरान यह 83.60 के उच्चस्तर तक गया तथा 83.66 प्रति डॉलर के निचले स्तर तक आया।

लाॅकहीड मार्टिन के सीईओ ने पीएम मोदी से की मुलाकात

एजेंसी ►► नई दिल्ली
 रक्षा क्षेत्र की प्रमुख कंपनी लाॅकहीड मार्टिन के सीईओ जिम टेसलेट ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की। बैठक के दौरान प्रधानमंत्री ने 'मेक इन इंडिया, मेक फॉर वर्ल्ड' को लेकर कंपनी की प्रतिबद्धता की सराहना की। यह मुलाकात गुरुवार को हुई। प्रधानमंत्री कार्यालय ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर लिखा, 'लाॅकहीड मार्टिन के सीईओ जिम टेसलेट ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की। लाॅकहीड मार्टिन भारत-अमेरिका एयरोस्पेस और रक्षा औद्योगिक सहयोग में एक प्रमुख भागीदार है। हम 'मेक इन इंडिया, मेक फॉर वर्ल्ड' के सपने को साकार करने की दिशा में उनकी प्रतिबद्धता का स्वागत करते हैं। तीन दशकों से अधिक समय के एक भरोसेमंद भागीदार के रूप में, हम स्थानीय उद्योग की होनहार प्रतिभा और क्षमताओं को पहचानते हैं। हम दोनों देशों के बीच रक्षा और औद्योगिक संबंधों को मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।'

100,000 रुपए करने जैसे उपायों पर विचार कर सकती है। इस व्यवस्था में स्वास्थ्य बीमा प्रीमियम (धारा 80डी के तहत) को शामिल करना और पर्याप्त स्वास्थ्य बीमा कवर को अपनाने को बढ़ावा देने के लिए उपलब्ध करौती सीमा को बढ़ाना शामिल है।

मेट्रो सिटी के लोगों को फायदा
 वित्त मंत्री द्वारा पेश किए जाने वाले वित्तीय बजट में एक बड़ी राहत बैंगलुरु के लोगों को भी मिल सकती है, क्योंकि बैंगलुरु से लेकर एनसीआर, हैदराबाद और पुणे को मेट्रो सिटी का दर्जा दिया जा सकता है। बता दें कि मेट्रो सिटी में एचआरपी की छूट मूल वेतन से 50 प्रतिशत तक होती है, जबकि अन्य शहरों में 40 प्रतिशत तक होती है। ऐसे में अगर इन शहरों को मेट्रो सिटीज के कटेगरी में शामिल किया जाएगा, तो लोगों को एक बड़ी राहत मिलेगी।

अब फिलफार्ट पर बजाज की समी बाइक, घर बैठे करें ऑर्डर

एजेंसी ►► नई दिल्ली
 अब आप घर बैठे फिलफार्ट से बजाज की मोटरसाइकिलों को भी खरीद सकते हैं। बजाज ऑटो ने शुक्रवार को एक बयान में बताया कि वह अपनी लगभग सभी मोटरसाइकिलों को ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म फिलफार्ट पर बेचेगी। बजाज ऑटो की लोकप्रिय बाइक्स में पल्सर, डोमिनार, एवेंजर, प्लेटिना और सीटी शामिल हैं। ये 100 सीसी से लेकर 400 सीसी तक की रेंज में आती हैं। इसके साथ ही बजाज पहली ऐसी कंपनी हो जाएगी, जो फिलफार्ट के जरिए ग्राहकों को इतने रेंज की बाइक ऑफर कर रही है। हालांकि बजाज की हाल में लॉन्च की गई सीएनजी बाइक्स, बजाज प्रोडम 125 शुरुआत में फिलफार्ट पर उपलब्ध नहीं होगी। बजाज ने बताया कि शुरुआत में देश के 25 शहरों के ग्राहक ऑनलाइन फिलफार्ट के जरिए बजाज की बाइक्स को खरीद सकते हैं। धीरे-धीरे बाकी शहरों में भी इस सुविधा को बढ़ावा जाएगा। बजाज ने ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों चैनलों में अपनी उपस्थिति बढ़ाके उद्देश्य से फिलफार्ट के साथ यह साझेदारी की है। साथ ही यह ग्राहकों के लिए खरीदारी को प्रक्रिया को भी सरल बनाता है।

कैसे खरीदें बजाज की बाइक?
 ग्राहकों को फिलफार्ट पर अपनी मनपसंद बजाज बाइक खरीदते समय एक्स-शोरूम कीमत का मुताबक करना पड़ेगा। इसके बाद फिलफार्ट बजाज के किसी अधिकृत डीलर से बाइक का संपर्क करावेंगी। यह डीलर बीमा, आरटीओ रजिस्ट्रेशन, केवाईसी डॉक्यूमेंट्स और सत्यापन से जुड़ी प्रक्रिया पूरी करेगा। अगर कस्टमर्स चाहें तो फिलफार्ट के जरिए भी बीमा और रजिस्ट्रेशन खरीद सकते हैं। या फिर डीलर को अलग से मुताबक कर सकते हैं। डॉक्यूमेंट्स से जुड़ी पूरी प्रक्रिया होने में 8-12 दिन लगेंगे, और बाइक लगभग दो सप्ताह के बाद बाइक की डिलीवरी ले सकते हैं।

2024-25 के लिए उसका 7.2 प्रतिशत वास्तविक जीडीपी वृद्धि का लक्ष्य

आर्थिक वृद्धि मजबूत, मुद्रास्फीति को काबू में लाने पर ध्यान : दास

एजेंसी ►► मुंबई
 भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर शक्तिरंजन दास ने शुक्रवार को कहा कि मौजूदा माहौल में जब आर्थिक वृद्धि दर अच्छी है, मौद्रिक नीति को स्पष्ट रूप से मुद्रास्फीति पर ध्यान देना चाहिए। तटस्थ दरों को लेकर बहस के बीच, दास ने कहा कि सैद्धांतिक और अमूर्त अवधारणाएं किसी व्यक्ति के निर्णय पर आधारित होती हैं और ये वास्तविक दुनिया में नीति निर्धारित नहीं कर सकती हैं। गौरतलब है कि आरबीआई लगातार नीतिगत दर पर यथास्थिति बनाए हुए है और दर पर फैसला करने वाली समिति के कुछ सदस्यों के बीच असहमति बढ़ रही है। ये सदस्य आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए नीतिगत दर में कटौती के पक्ष में हैं। अधिक ब्याज दर के

कारण वृद्धि पर पड़ने वाले प्रभाव को लेकर चिंता जताने वालों को जवाब देने हुए दास ने कहा कि मौजूदा नीतिगत दर के बावजूद वृद्धि मजबूत रही है। उन्होंने कहा कि आरबीआई को उम्मीद है कि वित्त वर्ष 2024-25 के लिए उसका 7.2 प्रतिशत वास्तविक जीडीपी वृद्धि का लक्ष्य हासिल हो जाएगा। उन्होंने कहा कि यह गति दूसरी तिमाही में भी जारी रहेगी।

मुद्रास्फीति पर ध्यान
 आरबीआई गवर्नर ने कहा कि पिछले तीन साल में भारत की औसत वृद्धि 8.3 प्रतिशत रही है। दास ने यहां फाइनेंशियल एक्सप्रेस के एक कार्यक्रम में कहा, 'वृद्धि स्थिर बनी हुई है। अब हमें मुद्रास्फीति पर स्पष्ट रूप से ध्यान केंद्रित करना होगा।' उन्होंने कहा कि आरबीआई विशेष रूप से खाद्य मुद्रास्फीति के मोर्चे पर ध्यान दे रहा है और शोक मूल्य मुद्रास्फीति पर भी नजर है।

कारोबारी घरानों को बैंक खोलने की नहीं देंगे मंजूरी
 मुंबई। भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर शक्तिरंजन दास ने शुक्रवार को कहा कि केंद्रीय बैंक के पास फिलहाल कारोबारी घरानों को बैंक खोलने की मंजूरी देने की कोई योजना नहीं है। दास ने कहा कि कारोबारी घरानों को बैंकों को प्रवर्तन करने की अनुमति देने से हितों के टकराव और संबंधित पक्षों के लेनदेन से जुड़ा जोखिम बढ़ जाता है। आरबीआई गवर्नर ने बैंकों के गठन की कारोबारी घरानों को मंजूरी देने संबंधी किसी योजना के बारे में पूछे जाने पर कहा, 'इस समय, उस दिशा में कोई विचार नहीं है। आरबीआई में लगभग एक दशक पहले बैंकों के लाइसेंस देने की प्रक्रिया के अंतिम दौर में कई बड़े कारोबारी समूहों को नए बैंकों का लाइसेंस देने के अयोग्य घोषित कर दिया था।

माइक्रोसॉफ्ट की सेवाओं में समस्या से एनएसई बीएसई प्रभावित नहीं

एजेंसी ►► नई दिल्ली
 देश के प्रमुख शेयर बाजारों-एनएसई और बीएसई पर माइक्रोसॉफ्ट की सेवाओं में आए वैश्विक व्यवधान का प्रभाव नहीं हुआ है। प्रमुख प्रौद्योगिकी कंपनी की सेवाओं में आए व्यवधान से दुनिया भर में कई एयरलाइंस, बैंक, मीडिया संस्थान के कामकाज पर असर पड़ा है। भारत समेत दुनियाभर में माइक्रोसॉफ्ट के उपयोगकर्ताओं को भारी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इंटरनेट व्यवधान पर नजर रखने वाली वेबसाइट डाउनडिटेक्टर पर विभिन्न सेवाओं से जुड़े दुनियाभर के उपयोगकर्ताओं ने इस संबंध में सूचना दी है। शेष बीच, दो प्रमुख भारतीय शेयर बाजारों-एनएसई और बीएसई पर माइक्रोसॉफ्ट की सेवाओं में आए वैश्विक व्यवधान का प्रभाव नहीं हुआ है। प्रमुख प्रौद्योगिकी कंपनी की सेवाओं में आए व्यवधान से दुनिया भर में कई एयरलाइंस, बैंक, मीडिया संस्थान के कामकाज पर असर पड़ा है। भारत समेत दुनियाभर में माइक्रोसॉफ्ट के उपयोगकर्ताओं को भारी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इंटरनेट व्यवधान पर नजर रखने वाली वेबसाइट डाउनडिटेक्टर पर विभिन्न सेवाओं से जुड़े दुनियाभर के उपयोगकर्ताओं ने इस संबंध में सूचना दी है। शेष बीच, दो प्रमुख भारतीय शेयर बाजारों-एनएसई और बीएसई पर माइक्रोसॉफ्ट की सेवाओं में आए वैश्विक व्यवधान का प्रभाव नहीं हुआ है।

सोना 750 रुपए टूटा, चांदी की चमक घटी

नई दिल्ली। आपूर्ण विक्रेताओं की कमजोर मांग के बीच राष्ट्रीय राजधानी के सरफा बाजार में शुक्रवार को सोना 750 रुपए की गिरावट के साथ 75,650 रुपए प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ। इसके साथ सोने में पिछले छह कारोबारी सत्रों से जारी तेजी पर विराम लग गया। अखिल भारतीय सरफा संघ ने यह जानकारी दी। इससे पिछले कारोबारी सत्र में सोना 76,400 रुपए प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ था। इस बीच, 99.5 प्रतिशत शुद्धता वाला सोना 800 रुपए घटकर 75,300 रुपए प्रति 10 ग्राम पर रहा। बुधवार को यह 76,100 रुपए प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ था। चांदी की कीमत भी 1,000 रुपए टूटकर 93,000 रुपये प्रति किलोग्राम पर रही।

संगम ढाबा बना सलीम भोजनालय व चाय लवर पॉइंट अहमद टी स्टॉल

एजेसी मुजफ्फरनगर

उत्तर प्रदेश में कांठड यात्रा से पहले मुजफ्फरनगर में खाने-पीने और फल की दुकान लगाने वाले दुकानदारों को अपने-अपने नाम लिखकर डिप्लोमा करने के लिए कहा गया है। यही नहीं अपनी दुकानों- होटलों पर काम करने वालों का नाम भी लिखने का आदेश जारी किया गया है।

इसे लेकर स्थानीय प्रशासन का कहना है कि सामान लेने वाले को यह पता होना चाहिए कि वो किसकी दुकान से खरीदारी कर रहा है। किसी को कोई संदेह नहीं होना चाहिए। सीएम योगी ने यह व्यवस्था पूरे प्रदेश में लागू करने का निर्देश दे दिया है। यहां दुकानदार, मालिक अपना नाम दुकानों के आगे लिखकर टांग रहे हैं।

मुजफ्फरनगर में कांठड रूट की दुकानों के असली नाम दिखे



सलीम 25 साल से कर रहे हैं व्यवसाय

दिल्ली-देहरादून नेशनल हाइवे-58 पर काफी कुछ बढ़ता-बढ़ता दिखा। हाइवे पर चाय की दुकान लगाने वाले एक मुस्लिम शख्स की दुकान का नाम कुछ दिन पूर्व 'चाय लवर पॉइंट' हुआ करता था लेकिन पुलिस के आदेश के बाद इस दुकान के मालिक फहीम ने अब अपनी दुकान का नाम 'सलीम अहमद टी स्टॉल' रख दिया है। वहीं, 25 साल से 'संगम शुद्ध भोजनालय' के नाम से चलने वाले ढाबे का नाम अब पुलिस के आदेश के बाद 'सलीम शुद्ध शाकहारी भोजनालय' हो गया है। सलीम का कहना है कि 25 साल से उसके ढाबे का नाम संगम शुद्ध भोजनालय था।

सुरक्षा के लिए 300 से अधिक वाहनों का रूट डायवर्जन

कांठड यात्रा के निर्धारित मार्गों को आसपास सुरक्षा कड़ी कर दी गई है। किसी भी स्थिति से निपटने के लिए प्रदेश सरकार ने प्रशासन को सख्त निर्देश दिए हैं। इससे करीब 300 से अधिक बसों का रूट बदल दिया गया। परिवहन विभाग ने रोडवेज बसों के लिए अंतिम रूट मैप तैयार कर लिया है।

अब उत्तराखंड में भी आदेश कांठड मार्ग पर दुकानदारों को लिखना होगा नाम



हरिद्वार उत्तर प्रदेश की तरह अब उत्तराखंड में भी कांठड यात्रा के रूट पर दुकानदारों को होटल और ढाबे वालों को रेट लिस्ट के साथ ही अपना नाम भी लिखना होगा। हरिद्वार पुलिस प्रशासन ने रेस्तरां मालिकों को कांठड यात्रा मार्ग पर नाम प्रदर्शित करने का पर जो होटल, ढाबे, रेस्तरां हैं या जो रेड्डी-पट्टरी वाले हैं उन्हें उनके मालिक का नाम अनिवार्य रूप से लिखना होगा। ऐसा न करने पर उनके खिलाफ कानूनी कार्यवाही की जाएगी।

लहसुन-प्याज वाला खाना वर्जित

मंगलौर क्षेत्र में ढाबे पर लहसुन और प्याज का भोजन परोसे जाने से हुए हंगामे के बाद पुलिस ने ढाबे और होटल संचालकों के साथ बैठक की। कांठड यात्रा के दौरान लहसुन और प्याज का खाना नहीं परोसा जाएगा।

ग्रेटर नगर निगम मेयर बोलीं जयपुर में लिखना होगा झटका या हलाक



उत्तर प्रदेश सरकार के प्रदेश में कांठड मार्ग पर खाने-पीने की दुकानों पर संचालकों और मालिकों के नाम के फरमान के बाद अब उत्तराखंड और राजस्थान में भी विशेष आदेश जारी किए गए हैं। राजस्थान की राजधानी जयपुर में मीट की दुकानों पर झटका या हलाक लिखना जरूरी होगा। यह आदेश ग्रेटर नगर निगम मेयर सौम्या गुजर ने दिया है।

खबर संक्षेप

मालगाड़ी पटरी से उतरी कोई जनहानि नहीं

सूरत। गुजरात में वलसाड और सूरत स्टेशन के बीच शुक्रवार को मालगाड़ी का एक डिब्बा पटरी से उतर गया। इस घटना में फिलहाल किसी के घायल होने की सूचना नहीं है। अपराधन करीब तीन बजे डुंगरी स्टेशन के पास हुई इस घटना के कारण मार्ग पर यातायात प्रभावित हुआ। मालगाड़ी सूरत जा रही थी। मुंबई-अहमदाबाद ट्रंक रूट पर यह दुर्घटना हुई।

राहुल चाहें तो मुस्लिमों की आबादी रूक सकते हैं

गुवाहाटी। असम के सीएम हिमंत बिस्व सरमा ने मुस्लिम आबादी पर कहा कि उनके राज्य में मुस्लिम आबादी हर 10 साल में लगभग 30 प्रतिशत बढ़ रही है और 2041 तक वे बहुसंख्यक हो जाएंगे। उन्होंने कटाक्ष करते हुए कहा, इस वृद्धि को रोकने में कांग्रेस की अहम भूमिका हो सकती है। यदि राहुल गांधी जनसंख्या नियंत्रण के ब्रांड एंबेसडर बनें तो यह संभव है।

'मन की बात' के लिए सुझाव आमंत्रित किए

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 28 जुलाई को होने वाले अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम "मन की बात" के लिए नागरिकों से सुझाव आमंत्रित किए हैं। पीएम मोदी ने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि विशेष रूप से कई युवा समाज को बदलने के उद्देश्य से सामूहिक प्रयासों को उजागर कर रहे हैं। जिन लोगों ने विचार साझा नहीं किए वे भी विचार साझा करें।

संविधान के अनुच्छेद 361 के तहत गवर्नर को विशेष सुविधा का प्रावधान राज्यपालों को आपराधिक अभियोजन से छूट देने वाले प्रावधान की समीक्षा होगी

सीजेआई ने एजी वेंकटरमणि से सहयोग मांगा

शीर्ष कोर्ट में छेड़छाड़ का आरोप लगाने वाली महिला की अर्जी पर होगी सुनवाई

महिला कर्मचारी ने लगाया था आरोप

राज्यपाल बोस की बढ़ सकती है मुश्किलें



सीजेआई ने एजी वेंकटरमणि से सहयोग मांगा

एजेसी नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने राज्यपालों को आपराधिक अभियोजन से छूट देने वाले संवैधानिक प्रावधान की समीक्षा करने की मांग वाली याचिका पर सुनवाई के लिए सहमति जता दी है। संविधान के अनुच्छेद 361 के तहत राज्यपाल को आपराधिक अभियोजन से छूट मिली हुई है। कोर्ट ने राज्यपाल सीबी आनंद बोस पर छेड़छाड़ का आरोप लगाने वाली महिला कर्मचारी की याचिका पर पश्चिम बंगाल सरकार को नोटिस जारी किया है। इसके साथ ही कोर्ट मामले से निपटने में अर्दोनी जनरल आर. वेंकटरमणि से सहयोग करने को कहा। कोर्ट ने बंगाल राजभवन की महिला कर्मचारी से कहा कि वह अपनी याचिका में केंद्र की भी पक्षकार बनाए। दरअसल, महिला ने राज्यपाल पर छेड़छाड़ का आरोप लगाया है।

सीजेआई की पीठ करेगी मामले की सुनवाई

सीजेआई डीवाई चंद्रवूड की अनुवाइ वाली पीठ ने मामले की सुनवाई करने पर सहमति जताई। यह अनुच्छेद संविधान के अनुच्छेद 14 (समानता का अधिकार) का अपवाद है और प्रावधान करता है कि राष्ट्रपति या राज्यपाल अपने पद के तहत प्राप्त शक्तियों के इस्तेमाल और कर्तव्यों के लिए किसी भी अदालत के प्रति जवाबदेह नहीं हैं। याचिकाकर्ता ने आपराधिक अभियोजन से छूट प्रदान करने के संघर्ष में निर्देश दिए जाने का अनुरोध किया है।

महिला कर्मचारी ने लगाया था आरोप

राज्यपाल बोस की बढ़ सकती है मुश्किलें

आपराधिक अभियोजन होले रहे राज्यपालों को अब झटका लग सकता है। दरअसल, सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को संविधान के अनुच्छेद 361 की रूपरेखा की जांच पर सुनवाई करने पर सहमति जताई है। इस अनुच्छेद के तहत राज्यपालों को किसी भी तरह के आपराधिक मुकदमे से पूर्ण छूट मिलती है। मामले में बंगाल के राज्यपाल सीबी आनंद बोस की मुश्किलें बढ़ सकती हैं।

बंगाल सरकार को नोटिस जारी

मुख्य न्यायाधीश चंद्रवूड की अध्यक्षता वाली पीठ ने पश्चिम बंगाल सरकार को एक संविदा महिला कर्मचारी की याचिका पर नोटिस भी जारी किया। महिला ने राज्य के राज्यपाल बोस पर छेड़छाड़ का आरोप लगाया है। महिला ने राज्यपाल को प्रतिरक्षा प्रदान करने वाले संविधान के अनुच्छेद 361 की व्यापक जांच की मांग की थी, जिससे निपटने के लिए सुप्रीम कोर्ट ने अर्दोनी जनरल आर वेंकटरमणि की सहायता मांगी। कोर्ट ने पश्चिम बंगाल 'राजभवन' की महिला कर्मचारी से कहा कि वह अपनी याचिका में केंद्र को भी पक्षकार बनाए।

राष्ट्रपति या राज्यपाल शक्तियों पर अदालत के प्रति जवाबदेह नहीं

यह अनुच्छेद संविधान के अनुच्छेद 14 (समानता का अधिकार) का अपवाद है और यह प्रावधान करता है कि राष्ट्रपति या राज्यपाल अपने पद की शक्तियों और कर्तव्यों के प्रयोग के लिए किसी भी अदालत के प्रति जवाबदेह नहीं हैं। इसी के खिलाफ महिला याचिकाकर्ता ने विशिष्ट दिशा-निर्देश तैयार करने के निर्देश मागे हैं, जिसके तहत राज्यपालों को आपराधिक अभियोजन से छूट प्राप्त है।

वकील के नेकबैंड न पहनने पर भड़के क्या यहां कोई फैशन परेड चल रही?

सुप्रीम कोर्ट में एक मामले की सुनवाई के दौरान सीजेआई चंद्रवूड ने एक वकील को पूरी यूनिफॉर्म न पहनने पर टोक दिया। डीवाई चंद्रवूड ने जब देखा कि वकील ने अपना नेकबैंड नहीं पहन रखा है तो उन्होंने कहा कि क्या यहां कोई फैशन परेड चल रही है? न्यायाधीश ने मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रवूड ने गुरुवार को एक वकील को अपने नेकबैंड के बिना कोर्ट रूम में आने के लिए फटकार लगाई। सुनवाई के दौरान वकील ने अतिक्रमण से संबंधित मामला उठाया और कहा कि यह अत्यावश्यक है।

सपा नए रास्तों की तलाश कर रही महाराष्ट्र में कांग्रेस-सपा मिलकर लड़ेंगी विस चुनाव! रोडमैप तैयार



सियासी विस्तार करने में जुटी

सपा ने लोकसभा चुनाव के बाद अपने विस्तार के लिए कई बड़ी योजनाएं तैयार की हैं। पार्टी के रणनीतिकारों की मानें, तो इस विस्तार में सपा उत्तर प्रदेश से बाहर निकलकर मजबूती के साथ अन्य राज्यों में चुनाव लड़ने की तैयारी में है। इसमें सबसे पहले सियासी जनगणना की मजबूती महाराष्ट्र में तैयार की जा रही है। महाराष्ट्र में समाजवादी पार्टी यही सियासी संदेश देने के लिए शुक्रवार को अपने सभी सांसदों की एक महत्वपूर्ण बैठक स्वगत समारोह के माध्यम से की। इस स्वागत समारोह के दौरान सपा न सिर्फ महाराष्ट्र में अपनी ताकत दिखाएगी, बल्कि आने वाले विधानसभा के चुनाव में अपने प्रत्यासिद्धियों को उतारने का पूरा खाका भी खींचेगी। इसके लिए पार्टी ने जातिगत समीकरणों के आधार पर महाराष्ट्र का पूरा सियासी रोड मैप तैयार कर लिया है।

देश में तीसरे नंबर की सबसे बड़ी पार्टी अपने विस्तार के लिए नए-नए सियासी रास्ते खोजने के लिए आगे बढ़ चुकी है। इस कड़ी में सबसे पहला पड़ाव सपा का महाराष्ट्र बना है। महाराष्ट्र में सपा के सभी 37 सांसदों का शुक्रवार को स्वागत समारोह होने जा रहा है। स्वागत समारोह के बहाने सपा महाराष्ट्र में अपनी सियासी जमीन की मजबूती तलाशने की पूरी तैयारी में है। वहीं खबर है कि महाराष्ट्र में सपा कांग्रेस के गठबंधन वाले महाविकास अघाड़ी के साथ मिलकर चुनाव लड़ेगी। इसके अलावा सपा महाराष्ट्र में होने वाले महानगरपालिका के चुनाव में भी शिरकत करने के लिए जमीनी तैयारी में लगी है।

भाजपा चाहती है अजित नवायुति छोड़े: थरद का दावा



मुंबई। एनसीपी (शरदचंद्र पवार) के प्रवक्ता वलाहड केस्टो ने दावा किया कि भाजपा अजित पवार गुट से महाराष्ट्र में महायुति गठबंधन छोड़ने को कह रही है। केस्टो ने 17 जुलाई को आरएसएस से जुड़ी एक मराठी साप्ताहिक मैगजिन में छपी रिपोर्ट के हवाले से ये बयान दिया है। केस्टो ने कहा कि भाजपा को एहसास हो गया है कि अजित पवार के साथ गठबंधन में पार्टी चुनाव नहीं जीत सकती है।

'प्राकृतिक' खेती का प्रयोग शुरू करें किसान, अमृत अन्न पैदा करें

भारतीय प्राकृतिक कृषि पद्धति को शिवराज ने किया संबोधित

एजेसी लखनऊ

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने 'भारतीय प्राकृतिक कृषि पद्धति' कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि किसान प्राकृतिक खेती का प्रयोग शुरू करें। ऐसा फल, सब्जी व अन्ना पैदा करें जो शरीर के लिए अमृत तुल्य हों। बिना केमिकल फर्टिलाइजर के उपयोग के गुणता के साथ उत्पादन भी बढ़ाया जा सकता है। यह धारणा बन गई है कि बिना केमिकल फर्टिलाइजर के उत्पादन नहीं बढ़ेगा लेकिन ऐसा नहीं है। पहले व दूसरे साल उत्पादन कम जरूरत होता है लेकिन तीसरे साल से उत्पादन बेहतर होने लगता है।

लखनऊ के द सेंट्रल होटल में किया कार्यक्रम

उत्पादन घटने नहीं देंगे, अन्न गंडार मरेंगे

सिंह ने लखनऊ के द सेंट्रल होटल में आयोजित कार्यक्रम में कहा कि हमारा संकल्प है कि उत्पादन घटने नहीं देंगे। देश के अन्न गंडार मरेंगे। ब्लोबल वार्मिंग से आज दुनिया चिंतित है। केमिकल फर्टिलाइजर के उपयोग से उत्पादन खूब बढ़ा। फल, सब्जी व अन्न खूब पैदा हो रहा है लेकिन क्या वह खाने योग्य है। सारे कोर्ट मित्र समाज हो गए। केजुआ दिखाई नहीं देता। अगर ऐसा ही चलता रहा तो यह धरती आने वाली पीढ़ियों के रहने लायक नहीं बचेगी। धरती बचेगी तो हम बचेंगे।

स्कूटी पर सवार राजे ने लिया कार्यों का जायजा



झालरापाटन राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया शुक्रवार को अपने विधानसभा क्षेत्र झालरापाटन कस्बे में स्कूटी पर सवार होकर पहुंची और कस्बे में विकास कार्यों का जायजा लिया। इस दौरान वसुंधरा राजे कस्बे में गंदगी और अवस्थाओं को देख भड़क गईं। इस दौरान उन्होंने अधिकारियों को लोगों की समस्याएं दूर करने का तत्काल निर्देश भी दिया।

दिल्ली में बन रहा केदारनाथ जैसा मंदिर



नई दिल्ली। ग्रे रंग से रंगे और कांच के बरसे में बंद केदारनाथ मंदिर का मॉडल काले रंग के खंभे पर टिका हुआ है। बगल में उत्तराखंड के मूल केदारनाथ मंदिर का एक विशाल चित्र है। 3 एकड़ में मंदिर बनाया जाना है। केदारनाथ में मंदिर के पुनारी विरोध कर रहे थे कि 'व्यावसायिक उद्देश्यों' के लिए प्रतिकृति मंदिर के लिए ज्योतिर्लिंग के नाम का उपयोग करना उन्हे अस्वीकार्य है।

उत्तर भारत समेत देशभर में हो रही झमाझम बारिश दिल्ली-यूपी समेत कई राज्यों में 5 दिन बरसेंगे बदरा

मौसम विभाग ने जारी किया अलर्ट

22 जुलाई तक का पूर्वानुमान

उत्तर भारत समेत देशभर में इन दिनों बारिश हो रही है। मौसम विभाग ने बताया है कि उत्तर पश्चिम, तटीय आंध्र प्रदेश, यनम, साउथ ओडिशा, साउथ छत्तीसगढ़ में 19 जुलाई, विदर्भ और तेलंगाना में 19 और 20 जुलाई को भारी बारिश होगी। कोंकण और गोवा, तटीय कर्नाटक, साउथ इंदीरापुर कर्नाटक में 19 और 20, गुजरात में 19, 21 और 22 जुलाई को भारी बारिश होगी और फिर इसके बाद इसमें कमी आएगी। मौसम विभाग ने बताया है कि दिल्ली और उत्तर प्रदेश में भी अगले पांच दिनों तक बारिश होगी।

गुजरात, आंध्र और ओडिशा में आज भी होगी तेज बरसात

इस बीच सौराष्ट्र, कच्छ, तमिलनाडु, छत्तीसगढ़, तटीय आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, विदर्भ में 19-20 जुलाई, गुजरात, आंध्र प्रदेश, यनम, दक्षिणी ओडिशा के इलाकों में भी हल्की से मध्यम और कुछ जगह भारी बारिश होगी। मंगोच पश्चिम बंगाल में भी 19 और 20 जुलाई को बारिश का अलर्ट जारी किया गया है। इसके अलावा, झारखंड में भी 20 जुलाई को हल्की से मध्यम बारिश का अलर्ट है। वहीं, छत्तीसगढ़ में 19 और 20 जुलाई को तेज बारिश होने वाली है। तेलंगाना और विदर्भ में 19 और 20 जुलाई को भारी बरसात की चेतावनी जारी की गई है।